इश्क़ और इबादत

काफ़िर से इमाम

विवेक नलावडे

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Vivek Nalawade 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-69906-49-4

Cover design: Deepak Katheria

First Edition: July 2026

"उन तमाम टूटे हुए दिलों के नाम, जिनकी दरारों से होकर ही ख़ुदा की रौशनी रूह तक पहुँचती है।"

लेखक की ओर से

यह महज़ कविताओं का संग्रह नहीं है; यह एक सफ़र है। एक ऐसा सफ़र जहाँ इश्क़ की शुरुआत किसी के हुस्न के दीदार से होती है, और ख़त्म खुद के वजूद को मिटा देने पर। मैंने पाया कि जब इंसान मज़ाज़ी (सांसारिक) इश्क़ में पूरी तरह टूट जाता है, तब वहीं से हक़ीक़ी (रूहानी) इश्क़ की पहली सीढ़ी शुरू होती है।

विशेष आभार नोट: इस पुस्तक के वैचारिक संपादन, रूपरेखा और सृजन की रूहानी यात्रा में महत्वपूर्ण एवं अमूल्य योगदान के लिए मैं अपने आत्मीय मित्र 'ऋषिकेश पाटील उर्फ़ महज़ूर' का हृदय से विशेष आभार व्यक्त करता हूँ। उनका सहयोग और उनकी काव्य-चेतना इस पुस्तक की आत्मा में समाहित है।

भाग १: इश्क़ की पहली आहट

आकर्षण, सौंदर्य, अभिलाषा और विस्मय का आरंभ

कली १

मेरे इरशाद कहने से तेरे ज़ख्म शायरी बन जाएं
वाह-वाह सुन कर सनम हँसकर वो मेरे हो जाएं
महबूब तेरे आँसू मेरे लफ्ज़ बनके बह जाएं यूँ
मेरी सारी लियाक़त तेरी एक हँसी पे फ़ना हो जाए

भावार्थ: कवि अपने दर्द को शायरी में तब्दील कर महबूब की एक हँसी पर सर्वस्व फ़ना करने की बात कहता है।

कली २

जितना पास आवे उतना दूर जावे,
कोई जप तप कर न शिव को पावे।
अरे ओ पंडित अब तो मंदिर छोड़,
या शिव नहीं ऐसा बता कोई मोड़।

भावार्थ: सूफ़ियाना आध्यात्मिक दर्शन; शिव रूपी सत्य बाहरी पाखंड या जप-तप से नहीं, केवल अंतरात्मा के विसर्जन से प्राप्त होता है।

कली ३

**तू निर्गुण जान तुझ को मूरत में ढालूँ,
जान तुझे निराकार तुझ पे गंगाजल डालूँ।
हाय प्रभु ये पाखंड अब मुझसे ना होवे,
हा अब कोई मुक्तिगीत ना मुझसे गावे।**

भावार्थ: प्रेम और बंदगी का निर्मल भाव; बाहरी दिखावे और थोपे गए मुक्तिगीतों को त्यागकर अंतर्मन से जुड़ना।

कली ४

**बड़ी बड़ी बातें मुक्ति मोक्ष निर्वाण,
न देखे कोई आईना देदे बड़ा ज्ञान।
वाह कहे समय काम मृत्यु बलवान,
अरे पाखंडी तेरा दो कौड़ियों पे ध्यान।**

भावार्थ: कोरे ज्ञान और पाखंड पर प्रहार। समय और मृत्यु के परम सच के सामने संसारी स्वार्थ तुच्छ है।

कली ५

शिव को पाऊंगा सोच चला मैं छोड़ संसार,
बस अब शिव ही ध्येय ध्यान मन में यही विचार।
त्यागूँ माता-पिता, त्यागूँ मित्र, जाया, संतान,
सामने देखूँ सपरिवार अर्धनारीश्वर विराजमान।

भावार्थ: एकाकी वैराग्य के भ्रम को तोड़ता सच; जब संसार छोड़ शिव को ढूँढने निकले, तो सामने पूर्ण परिवार सहित अर्धनारीश्वर मिले।

कली ६

खोया उतना फ़कीर गया जितना भीतर,
बाहर का जग भला झमेला बड़ा अंदर।
खोजा खुद को जितना पाया बस कंकर,
दुनियादारी ही भली हार गया मैं शंकर।

भावार्थ: आत्म-अन्वेषण की यात्रा; जहाँ बाहरी संसार का शोर शांत होने पर भी मन के भीतर का झमेला समर्पण की मांग करता है।

कली ७

तेरे दिल से मैंने दिल लगा देख लिया
इश्क़ के खुदा को सजदा कर देख लिया
बस लग गई है आग और उठा है बवंडर
चाँदसी तेरी आँखें देख जल उठा समुंदर

भावार्थ: मज़ाज़ी प्रेम की विरह-तपन, जो मन के शांत समंदर में तीव्र भावनाओं की आग लगा देती है।

कली ८

जमीर जिंदा रखना है तो मरना बहुत जरूरी है,
सर ऊंचा रखना है तो मरना बहुत जरूरी है।
घुट-घुट कर जी कर भी आप मरोगे ही साहब,
दास्तां अपनी लिखनी है तो मरना बहुत जरूरी है।

भावार्थ: स्वाभिमान और गरिमा की रक्षा के लिए अहंकार की बलि (मरना) देना अत्यंत आवश्यक है।

कली ९

किसी वजह को वाजिब नहीं समझता
बेवफ़ा को मुजरिम कहलवाने के लिए,
वो मोहब्बत मोहब्बत ही क्या जो तड़पे
महबूब को शैतान कहलवाने के लिए।

भावार्थ: सच्चा प्रेमी विरह मिलने पर भी अपने प्रिय पर कोई दोष या लांछन नहीं लगाता; प्रेम में मर्यादा सर्वोपरि है।

कली १०

हम तो बदनाम हैं ग़ालिब न किए हुए गुनाहों के लिए,
शरीफ़ कहलाते हैं वो जिन्होंने गुनाह-ए-अज़ीम किए हैं।

भावार्थ: दुनिया की झूठी बदनामी से परे सत्य का बोध; जहाँ ढोंगी लोग अपने बड़े पाप छिपाकर शरीफ़ बने बैठे हैं।

कली ११

हम इश्क़ में वफ़ा चाहते तो हैं
महबूब से नहीं अपने आप से,
हम इबादत में ईमान चाहते तो हैं
पर खुदा से नहीं अपने आप से।

भावार्थ: आत्म-परिपक्वता की घोषणा; जहाँ वफ़ा और ईमानदारी की उम्मीद दूसरों से करने के बजाय स्वयं के भीतर जाग्रत करनी होती है।

कली १२

तू पास नहीं तो कोई बात नहीं,
अगर चाँद नहीं तो क्या रात नहीं?
सनम, है तू उस खुदा की तरह,
तू साथ नहीं तो क्या, साथ नहीं?

भावार्थ: प्रियतम की भौतिक अनुपस्थिति मायने नहीं रखती, क्योंकि उसकी आत्मिक अनुभूति साक्षात विधाता की तरह कण-कण में साथ है।

कली १३

शायरी में हमें दर्द बयां करना आता है
आँसू बहाके खुद को सहलाना आता है
तुम फर्ज़ अदा करने में मशरूफ हो इतने
खुद के लिए तुम्हें वक्त खरीदना कहाँ आता है

भावार्थ: कवि कला के माध्यम से अपने दुखों को अभिव्यक्त करता है जबकि दुनिया अपने कर्तव्यों में अपनी आत्मा को ही भूल चुकी है।

कली १४

उसके खयालों में अब खोना नहीं चाहता,
उसकी याद में आंसू बहाना नहीं चाहता।
मेरी मैय्यत में उसको न बुलाना 'ग़ालिब',
मैं जन्नत से लौटकर आना नहीं चाहता।

भावार्थ: आत्म-सम्मान की पराकाष्ठा, जहाँ प्रेमी जीवन और मृत्यु के पार जाकर भी बेवफ़ाई के साये से दूर रहना चाहता है।

भाग २: इश्क़ का जुनून

जुनून, दीवानगी, अगाध समर्पण और आत्म-विस्मृति

कली १५

साँसें न हों, वक़्त न हो, दवा न हो, दुआ न हो,
पल हो ऐसा कोई पास मेरे कोई तेरे सिवा न हो।

भावार्थ: प्रेम की चरम पराकाष्ठा जहाँ जीवन के अंतिम क्षणों में भी साधक केवल और केवल अपने प्रिय की ही साक्षात उपस्थिति चाहता है।

कली १६

न कुछ कसूर है तेरा, मुझे भी कोई शिकवा नहीं,
तुझपर कोई इल्ज़ाम नहीं, मैं बिल्कुल रुसवा नहीं
पर अब तू चाहे जितनी भी वफ़ा की कसमें खाएगी,
कयामत आएगी पर तू दिल में लौट नहीं पाएगी।

भावार्थ: हृदय-भंग के बाद उपजा एक अडिग वैराग्य भाव; जहाँ विरह को स्वीकार कर लिया गया है और अब पुरानी कड़वाहट के लौटने का कोई मार्ग शेष नहीं।

कली १७

परवाना बनके जलने का जुनून तो नहीं था,
कली में घुट-घुट मरने का जुनून तो नहीं था।
हम इश्क़ तो नहीं करना चाहते थे ग़ालिब,
पर बेमक़सद ज़िंदा रहने का जुनून तो नहीं था।

भावार्थ: जीवन को बेमक़सद जीने के बजाय विरह और प्रेम की तपन से गुज़रकर उसे एक उच्च ध्येय देना अधिक श्रेयस्कर है।

कली १८

जैसी मैं सोचता था बेवफा वैसी नहीं थी तू,
अगर होती तो मेरा जनाज़ा निकल चुका होता।

भावार्थ: विरह के आवेश के बाद उपजा एक शांत अहसास जो प्रियतम की सांसारिक सीमाओं को स्वीकार करता है।

कली १९

लौट आई हो तुम जिसके पास वो शख्स अब अलग है,
वो लेटा हुआ है कब्र में जिसके आंखों में तेरी झलक है।

भावार्थ: समय के साथ प्रेमी का पुराना रूप विलीन हो चुका है; अब केवल एक शांत और परिपक्व साधक ही शेष है।

कली २०

शराब पीकर मंदिरमे ना आया कर गोपाल
नशे दो तर्हेके एक साथ किये नहीं जाते
तू कर मोहब्बत या कर इबादत गोपाल
जहर दो तर्हेके एक साथ पिये नहीं जाते

भावार्थ: वासना और ईश्वरीय प्रेम विपरीत प्रवृत्तियाँ हैं, दोनों नावों पर एक साथ पैर रखना आत्मिक भटकाव लाता है।

कली २१

जल कर हुए हैं राख ग़ालिब,
अब मौत से हमें डर नहीं लगता,
दोस्त यूँ सही है बेवफाई हमने,
अब इश्क से हमें डर नहीं लगता।

भावार्थ: जब प्रेम में तपकर अहंकार पूरी तरह भस्म हो जाता है, तब इंसान संसार के समस्त भयों और चोटों से मुक्त हो जाता है।

कली २२

अब कहाँ तन्हा मैं, साथ मेरे तन्हाई,
तन्हाई ही हमदम मेरा, दोस्त मेरी तन्हाई।
तन्हाई से ना रुसवा, ना तन्हाई से खफ़ा,
तन्हाई मेरा इश्क़, हा तन्हाई से ही वफ़ा।

भावार्थ: सूफ़ियाना दर्शन जहाँ एकांत अब कोई अभिशाप नहीं बल्कि ईश्वर की साक्षात और आत्मीय उपस्थिति बन जाता है।

कली २३

जरूरत भी जरूरत के हिसाब से जज़्बात बन जाती है,
कभी दोस्ती, कभी मोहब्बत, कभी इबादत बन जाती है।

भावार्थ: सांसारिक परिचय का क्रमिक रूप से दोस्ती, फिर प्रेम और अंततः पूर्ण समर्पण व इबादत में रूपांतरण।

कली २४

कोई मोहब्बत करे तो ऐसी करे,
न कोई शायरी न कोई कहानी बने।
बस हो अमन और अज़ां-सा सुकून,
मोहब्बत बस एक रूहानी नूर बने।

भावार्थ: दिखावे और शोर से परे, प्रार्थना की अज़ान जैसा शांत, रूहानी और असीम सुकून देने वाला सात्विक प्रेम।

कली २५

ऐ खुदा मेरा इश्क सैलाब हो गया है,
आसमान में जलता आफताब हो गया है।
अब करे ये इश्क जहां को रोशन रोशन,
रहमत हुई उसपर, और पाक हो गया है।

भावार्थ: जब मानवीय प्रेम ईश्वरीय प्रकाश (नूर) में तब्दील हो जाता है, तब वह पूरे चराचर जगत को आलोकित करने योग्य बनता है।

कली २६

आशिकी का एक वसूल है गालिब,
महबूब को कभी बदनाम नहीं करते।
जल जाते हैं हंसते-हंसते आशिक,
मुजरिम पर कोई इल्जाम नहीं करते।

भावार्थ: सच्चे प्रेम का सर्वोच्च नियम यही है कि जुदाई या चोट मिलने पर भी प्रियतम को कभी दुनिया के सामने रुसवा नहीं किया जाता।

कली २७

छलकता जाम, जल रही है शमां,
उनकी यादों से महक रहा समां।
उनके ख्यालों में मशरूफ हैं हम,
अकेला चाँद और मदहोश आसमाँ।

भावार्थ: विरह की एक शांत रात का दृश्य जहाँ प्रिय की यादें संपूर्ण प्रकृति और चेतना को मदहोश कर देती हैं।

कली २८

खुद को आईने में देख के अक्सर रो देते हैं हम
खुद पे तरस खाके जाम-ए-ग़म भी पी लेते हैं हम
अब लगता है बस खुद से ही मोहब्बत की है हमने
अगर दिल लगाते तो क्या हाल-ए-दिल बयां करते

भावार्थ: संसार के मिथ्या संबंधों से थककर जब इंसान स्वयं की आत्मा से मिलता है, तो उसे वास्तविक आत्म-प्रेम का बोध होता है।

भाग ३: टूटन और तजुर्बा

विरह, हृदय-भंग, निराशा और कड़वे सांसारिक सच

कली २९

मोहब्बत के लिये गीर के फिर से खडा हू
मोहब्बत के लिये मै मुश्किल जंग लडा हू
सोच के उनके दिल मे हो मेरा कुछ रुदबा
या खुदा जंगे मैदान मे कफन बांधे खड़ा हूं

भावार्थ: मान-सम्मान की रक्षा और प्रिय के दिल में ऊंचा स्थान पाने के लिए आशिक सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार है।

कली ३०

इश्क इबादत या शौक है दिल का ये समजने
हमने कभी मैफिल कभी मंदिर का रुख किया
न हुजूर से इजहार किया न किया उन्हे रुसवा
हम जले परखे और निखरे आहिस्ता आहिस्ता

भावार्थ: प्रेम महज़ मन बहलाने का साधन है या रूह की बंदगी; विरह के एकांत में ही आत्मा का सच्चा निखार संभव है।

कली ३१

रेगीस्ता मे हो बेमौसम बारिश,आप मुस्कुरा न किजीये
बंजर जमी बने खिला चमन आप मुस्कुरा न किजीये
आदत नही है हमे ये हुस्नपरी यु बेवजह खुश होने की
मोहब्बत न हो जाये जिंदगीसे,आप मुस्कुरा न किजीये

भावार्थ: प्रियतम की मुस्कान बंजर मरुभूमि में अप्रत्याशित बारिश जैसी है; प्रेमी को दोबारा नश्वर जीवन से आसक्ति होने का भय है।

कली ३२

बेशक उगते सुरजसे ली उनोने सुर्ख ओठोंकी ये लाली
घनी रात से बनी है शायद उनकी ये झूल्फे काली काली
गालिब यु तो बस खोये रेहते है हम उनकेही खयालोमे
बेखयाली मे न हो उनका ख्याल तो खाक वो बेखयाली

भावार्थ: प्रिय के बाह्य सौंदर्य का अनूठा वर्णन; जिसके ख्यालों की बेख्याली में भी केवल उसी का अक्स समाया हुआ है।

कली ३३

हम गालिब ना बनते अगर ये दिल ना टुटता
हम सुकरात ना बनते अगर ये दिल ना टुटता
रुह तक पोहचनेके लिये दिल टूटना जरुरी है
मोहब्बत के जरा से आगे तो इबादत खडी है

भावार्थ: हृदय-भंग ही सृजन और दर्शन की पहली सीढ़ी है; जहाँ मज़ाज़ी प्रेम की सीमा समाप्त होती है, वहीं से इबादत शुरू होती है।

कली ३४

यु जीना उनके बिना मुर्शिद नामुमकिन तो नहीं था
जिंदगी के मुकाम पाना सनम मुश्किल तो नहीं था
ग़ालिब उनके यादोंको जलाके हम शमशान से तो लोटे
भस्म उठा ले आये खुदको रोकना मुश्किल तो नहीं था

भावार्थ: विरह के मरुस्थल से लौटकर भी उनकी स्मृतियों की भस्म को सीने से लगाए रखना प्रेमी के अडिग स्वाभिमान का प्रमाण है।

कली ३५

अच्छा है आज जो आप हमारी हमसफर नही
शायद इसलिये आप हमारी हमराह बनी रही
अमृत मिले बिना मांगे सो वो यु जल बन जाये
जलके लिये तडपे रुह तो जल अमृत कहलाये

भावार्थ: जीवन की कड़वाहट से उपजा आध्यात्मिक सच; बिना माँगे मिला अमृत भी साधारण जल बन जाता है, जबकि तड़प कर मिली बूंद ही वास्तविक अमृत है।

कली ३६

सनम अच्छा है आप साथ नही,अच्छा है याद नही
जी रहे है हम आपबिना किसीसे कोई फिर्याद नही
हमारे कुछ गुनाह रहे होंगे जो आप हमारे साथ नही
बस नादानं दिल रबसे रुसवा है और कुछ बात नही

भावार्थ: नियति के फैसलों के सामने एक मौन आत्मसमर्पण; शिकायत महबूब से नहीं, बस नादान दिल ईश्वर से थोड़ा रुसवा है।

कली ३७

सनम तेरे इश्कको हम निभाते रहे युही
गहरे समुन्दरमे ना किनारा मिला कही
युही कटता रहा मेरे हसरतो का सफर
मे काटता रहा सजा और तू रही बेखबर

भावार्थ: विरह यात्रा का मर्म; प्रेमी आजीवन असीम सागर में भटकता रहा और प्रियतम उसकी इस मूक तपस्या से पूरी तरह बेखबर रहा।

कली ३८

सनम जंग लडकर मै हुस्न को कर लू हासील
यु आपका हुस्न कहां मेरे होंसलो के काबील
दिलेरी से मुक्कमल ये आशिकी जरूर होगी
पर खुदा रुठ जायेगा ये कायनात बद्दूवा देगी

भावार्थ: बलपूर्वक पाया गया सौंदर्य प्रेम नहीं कहलाता; ऐसी ज़बरदस्ती से ईश्वरीय संकल्प और कायनात की मर्यादा भंग होती है।

कली ३९

उस बेखोंफ इश्क की मदहोशी मे
सनम उस 'मै' की हुई खुदखुशी मे
जिंदा है रुह आज भी मौत के बाद
जिंदगी फिर शुरु कह गालिब इर्शाद

भावार्थ: सूफ़ियाना दर्शन का चरम बिंदु; प्रेम में अहंकार (मैं) की खुदकुशी के बाद ही रूह का वास्तविक अमर जीवन शुरू होता है।

कली ४०

तुम्हारे लफ़्ज़ों का हुनर धोखा खा गया ग़ालिब,
जो तूने मेरे इश्क़ को हँसकर जज़्बात कह दिया।

भावार्थ: जज़्बात बदलते रहते हैं, पर सच्चा प्रेम शाश्वत होता है; प्रियतम का चतुराई भरा हुनर इस रूहानी सच को भाँप न सका।

भाग ४: इश्क़ से इबादत तक

अहंकार का विसर्जन, समर्पण, आस्था और रूहानी रूपांतरण

कली ४१

लाख कोशिश करले दुनिया
फिरभी अगर वो जुदा न हो
गौर से देख खुशनशीब दोस्त
कही वो शक्स तेरा खुदा न हो

भावार्थ: प्रेम की ईश्वरीय सत्ता; जब दुनिया की तमाम ताकतें मिलकर भी दो रूहों को अलग न कर सकें, तो समझो प्रेम साक्षात परमात्मा का रूप ले चुका है।

कली ४२

ये मोहब्बत है सौगात मोहब्बत है जहर
इश्क है हंसी गुलाब जो ढाता है कहर
सनम इश्क की गेहराइ क्या नापोगे तुम
मोहब्बत की गलियो मे हुए कितने गुम

भावार्थ: प्रेम के विरोधाभासी आयाम; यह जीवन का परम उपहार भी है और जानलेवा ज़हर भी, जिसकी गहराइयों का कोई छोर नहीं।

कली ४३

बेहका सा वो समा और आँखोकी गुस्ताखीया
वो मेहके हुवे बाल और ओठोँकी वो सुरखीया
आँखोके वो जाम सनम बढाते रहे मदहोशिया
वो थे हसीं पल जब बन रहा था हमारा आशिया

भावार्थ: आकर्षण के शुरुआती हसीन दिनों का सुंदर संस्मरण; जहाँ प्रिय की आँखें और उसकी हर अदा मदहोशी बढ़ाती थीं।

कली ४४

हुजूर हुस्न मुजरा करता है ताकद के सामने
इश्क तडपता है हमेशा नशेका हाथ थामने
क्यूँ वक्त जाया कर रहा हुं तुम्हे समझाने मे
हुस्न होगा मेहलोमै और आशिक मेखाणे मे

भावार्थ: सांसारिक यथार्थ पर करारा प्रहार; हुस्न और सौंदर्य महलों की ताकत के सामने झुक जाते हैं, जबकि सच्चा आशिक मयखाने में तड़पता रह जाता है।

कली ४५

आब-ए-हयात चखकर तेरे बंदे खुश नहीं हैं,
और हम हैं जो इश्क़ का ज़हर पीके झूमते हैं।

भावार्थ: जीवन की नश्वरता का बोध; दुनिया अमरता का पानी ढूँढकर भी दुखी है, और एक सच्चा आशिक विरह के ज़हर में भी मस्त घूमता है।

कली ४६

कशमकश है कि ये इश्क़ है या जुनून ऐ ग़ालिब,
और ये समझने के लिए भी होशो-हवास कहाँ हैं।

भावार्थ: मानसिक संतुलन खोने की अवस्था; प्रेम और दीवानगी के इस बारीक अंतर को समझने का विवेक प्रेमी कब का खो चुका है।

कली ४७

फ़र्क कर महबूब और ख़ुदा में आशिक,
कभी किसी हस्ती के लिए सजदा नहीं होता

भावार्थ: ईश्वर और इंसान की सीमाओं का ज्ञान; किसी नाशवान हस्ती के सामने रूह का अंतिम सजदा नहीं किया जाता।

कली ४८

एक ही वसूल है मोहब्बत और इबादत का,
खुद के कुर्बानी बिना दुआ क़बूल नहीं होती।

भावार्थ: भक्ति और प्रेम का साझा नियम; जब तक स्वयं के स्वार्थ और अहंकार की आहुति नहीं दी जाती, तब तक कोई प्रार्थना स्वीकृत नहीं होती।

कली ४९

तेरे सारे गुनाहों को सर पे ले लिया,
तेरे हर नाफ़रमानी को सजदा समझ लिया।
देख के तेरी पाक मोहब्बत काफ़िर,
तेरे नाम मैंने जन्नत का फ़रमान कर दिया।

भावार्थ: ईश्वरीय क्षमा और अनुकंपा; प्रिय की निश्छल नाफ़रमानियों को भी परमात्मा ने सच्ची पूजा मानकर उसके लिए मोक्ष तय कर दिया।

कली ५०

तुझे बाहों में भरने का कोई इरादा नहीं है, चाँद
तू रोशन रहना वहाँ और हम यहाँ आबाद रहेंगे।

भावार्थ: निष्काम प्रेम की पराकाष्ठा; जहाँ प्रिय को पाने की ललक नहीं, केवल उसकी दूरस्थ उन्नति और प्रसन्नता ही जीवन का आधार है।

कली ५१

तेरी नज़र हर ज़ख़्म का मरहम बन गई,
तेरी यादें मेरी ज़िन्दगी की हमदम बन गई।
जाने कब माँगा था तुझे सज्दे में ख़ुदा से,
जो सनम तू मेरा धर्म मेरा ईमान बन गई।

भावार्थ: प्रियतम का रूहानी स्थान; जहाँ उसका प्रेम सांसारिक घावों का मरहम बनता हुआ अंततः साधक का संपूर्ण धर्म और ईमान बन जाता है।

कली ५२

दोबारा मोहब्बत कर ले ग़ालिब छोड़ दे अब गुरूर,
दूसरी बारिश में खुशबू न सही मौसम बदलता ज़रूर।

भावार्थ: जीवन की नई शुरुआत का संदेश; अतीत के घमंड को त्यागकर आगे बढ़ने से जीवन का रूखापन भले न बदले, पर जीने का मिज़ाज ज़रूर बदल जाता है।

भाग ५: आत्मबोध

ज्ञान, शिवत्व, द्वैत से अद्वैत का मिलन और परम विसर्जन

कली ५३

कई तेरे हुस्न के आशिक़, कई अदाओं के कायल हैं,
जब हम तेरी रूह से हुए रूबरू, बस तबसे घायल हैं।

भावार्थ: बाह्य सौंदर्य क्षणभंगुर है; कवि का दिल महबूब के चेहरे पर नहीं, उसकी पावन और निश्छल अंतरात्मा (रूह) पर घायल हुआ है।

कली ५४

हराम है तुझको मस्जिद ग़ालिब अगर तू आशिक़ नहीं,
बिना मोहब्बत में दीवानगी के बंदगी तुझे हासिल नहीं।

भावार्थ: के लिए प्रेम की दीवानगी नहीं है, तो मस्जिद या मंदिर जाना पूरी तरह व्यर्थ है।

कली ५५

हर दीवाने को यहाँ गुलाब-ए-इश्क़ चाहिए साहिब
बस चमन खिलाने की कोई जद्दोजहद नहीं चाहता।

भावार्थ: आधुनिक संकीर्ण मानसिकता पर चोट; हर कोई प्रेम का मीठा फल (गुलाब) तो चाहता है, पर उसे सींचने और तड़पने की जद्दोजहद से भागता है।

कली ५६

क्या कहें क्या अंदाज़ है इन नशीली आँखों का प्यारे,
हाँ कभी चाँद कभी आसमां कभी दरिया कभी किनारे।

भावार्थ: महबूब की आँखों की अगाध विशालता; जिसमें डूबने पर कभी प्रेम का चाँद, कभी असीम आसमान तो कभी किनारा दिखाई देता है।

कली ५७

आंधी आयी है बाज देखता क्या तू उडणा शुरु कर
देख घना अंधेरा छाया सुरज तू अब जलना शुरु कर
तुफान आया चल निकाल कशती तेरा सफर शुरु कर
निकले है हम समंदर अब तू फिकर करणा शुरु कर

भावार्थ: विषम परिस्थितियों में सोई हुई चेतना को जगाने का शंखनाद; संकट के समय ही बाज को अपनी असीम उड़ान शुरू करनी होती है।

कली ५८

उनके तसल्लूतसे हमारे जजबात कत्ल हुवे
उनकी हुकमरा बाहोमे घुट घुट के हम जिये
बांध टुटा हमारे सब्र का और किस्सा हो गया
उस दिनसे मै बेवफा नाम से मशहूर हो गया

भावार्थ: महबूब के मानसिक नियंत्रण और बंधनों से तंग आकर जब सब्र का बांध टूटा, तो स्वाभिमान की रक्षा को समाज ने बेवफ़ाई का नाम दे दिया।

कली ५९

उनकी ओठो पे कितनी खतम हुई बाते
उनकी बाहोमे मिली हमे कितनी सौगाते
आँखो के दीपोने जगाई मेरी हर रात थी
जन्नत ठुकराइ थी जब वो मेरे साथ थी

भावार्थ: अतीत के चरम सामीप्य का सुंदर स्मरण; जब महबूब का साथ हासिल था, तब उसके सामने स्वर्ग (जन्नत) का सुख भी तुच्छ प्रतीत होता था।

कली ६०

क्या फरक है मंदिर और मैखाने मे गोपाल
खुद को भूलाना तय है यहाँ भी और वहाँ भी
क्या फर्क है मोहब्बत और इबादत मे गोपाल
यु तेरा टूटना तो तय है यहाँ भी और वहाँ भी

भावार्थ: विसर्जन का शाश्वत नियम; चाहे मार्ग मयखाने का हो या मंदिर का, प्रेम का हो या इबादत का—अहंकार का टूटना और मिटना शत-प्रतिशत तय है।

कली ६१

बांध दु तुम्हे शायरीमे लब्जोमे कमी होगी
तस्वीर मे रंग दु तुम्हे रंगत की कमी होगी
केह दु तुझे हूर परी तो नजरमे कमी होगी
केह दु प्यार है तो जजबातोमे कमी होगी

भावार्थ: प्रिय के सौंदर्य और गरिमा की असीमता; जिसे न तो शब्दों में बांधा जा सकता है, न रंगों में ढाला जा सकता है—वह उपमाओं से परे है।

कली ६२

तुझेही नही मुझेभी तेरे सिरत पे गुमान है
गिरेबा मे झाकू तो सनम तू मेरा इमान है
मैने बडी फुरसतसेतराशा तेरा किरदार है
उस किरदारका माशुका ये दिल वफादार है

भावार्थ: महबूब के चरित्र पर अटूट गर्व; प्रेमी जब स्वयं के भीतर झांकता है, तो पाता है कि उसका प्रिय ही उसका सबसे बड़ा ईमान और निष्ठा बन चुका है।

कली ६३

हुस्न तेरा करे बया लब्जो की हिमाकत नही होती
पोहचे तेरे दिलतक लब्ज कोई हिदायत नही होती
कहा किस शायरी ने शायर को काबील बनाया है
तेरे हुस्नके मुकाबील शायरीसे मुलाकात नही होती

भावार्थ: कला और हुस्न का संबंध; प्रिय का सौंदर्य इतना रूहानी है कि कोई भी साधारण शब्द या विधा उसकी गहराई को छूने की हिमाकत नहीं कर सकती।

कली ६४

आँखोका नुर थी जन्नत कि हूर थी
वो मेरा सुरूर थी वो मेरा गुरुर थी
जो उसकी सिरत किरदार खतम हुवा
यु मेरे सामने मेरा यार भसम हुवा

भावार्थ: विरह का चरम शोक; जो कभी प्रेमी के जीवन का गौरव, नूर और गुरूर थी, आज उसकी स्मृतियों के विसर्जन के साथ ही वह आशिक चेतना भस्म हो चुकी है।

कली ६५

मेरे इरशाद कहने से तेरे ज़ख्म शायरी बन जाएं
वाह-वाह सुन कर सनम हँसकर वो मेरे हो जाएं
महबूब तेरे आँसू मेरे लफ्ज़ बनके बह जाएं यूँ
मेरी सारी लियाक़त तेरी एक हँसी पे फ़ना हो जाए

भावार्थ: कवि अपने दर्द को शायरी में तब्दील कर महबूब की एक हँसी पर सर्वस्व फ़ना करने की बात कहता है।

उपसंहार

उस बेखौफ़ इश्क़ की मदहोशी में
सनम उस 'मैं' की हुई खुदकुशी में
ज़िंदा है रूह आज भी मौत के बाद
ज़िंदगी फिर शुरू कह ग़ालिब इर्शाद।

आभार

मैदान-ए-इश्क़ से लेकर मज़ार-ए-इबादत तक के इस सफ़र को मुकम्मल करने में जिन ख़यालात, जज़्बात और परिस्थितियों ने इस टूटे हुए दिल को थामे रखा, मैं उन सबका शुक्रगुज़ार हूँ।

मैं उन तमाम मुश्किल रास्तों, ख़ामोश रातों और वक़्त के हर उस थपेड़े का आभार व्यक्त करता हूँ, जिसने मुझे बिखरने तो दिया, मगर हर बार एक नए और संवरे हुए रूप में उभरने का हौसला भी दिया। यह किताब उन सभी रूहों के प्रति एक सजदा है जिन्होंने कभी न कहीं मोहब्बत की आग से गुज़रकर अपनी बंदगी को पाया है।

लेखक परिचय

विवेक नलावडे की लेखनी इंसानी जज़्बातों की गहराइयों, रूहानी कश्मकश और सूफ़ियाना मिज़ाज का बेहतरीन संगम है।